श्री नरेन्द्र जाधव की पुस्तकों के विमोचन के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

16 नवम्बर, 2005
नई दिल्ली

श्री नरेन्द्र जाधव की पुस्तकों के विमोचन के अवसर पर उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। ये पुस्तकें उनकी विद्वता, पांडित्य और विशेषकर विपरीत परिस्थितियों के विरूद्ध जीवन में प्रगति करने के दृढ़ संकल्प की द्योतक हैं। ये वास्तव में साहस की मूर्ति हैं। मुझे आज इन पुस्तकों का विमोचन करते हुए बहुत खुशी हो रही है क्योंकि विश्व के लिए श्री नरेन्द्र का संदेश न केवल हमारी सामाजिक और आर्थिक वास्तविकता की खामियों की समीक्षा करना है, बल्कि यह हमें बताता है कि गलत बात को किस तरह ठीक किया जाए। उनके सभी कार्य हमारे लोगों को इस आशावादी भविष्य की राह दिखाते हैं।

वास्तव में, श्री नरेन्द्र का जीवन स्वयं में संघर्ष और प्रगति की एक कहानी है। वास्तविक संघर्ष के बाद ही प्रगति हासिल होती है। यदि श्री नरेन्द्र ने हमारे करोड़ों देशवासियों जो उपेक्षा और भेदभाव के शिकार रहे, की तरह डटकर सामना न किया होता, अच्छे जीवन के लिए संघर्ष न किया होता, तो हमने अपने जीवन में जो प्रगति देखी है, वह संभव नहीं होती। लेकिन हम इस स्थिति से संतुष्ट होकर नहीं बैठे रह सकते। हमें अभी काफी आगे बढ़ना है।

डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर या हमारे प्रिय भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ0 के.आर. नारायणन के जीवन की तरह, डॉ0 जाधव के जीवन की कहानी भी साहस, प्रगति, आशा और बदलाव की कहानी है। मेरा यह मानना है कि इससे हमारे करोड़ों कमजोर और उपेक्षित नागरिकों को प्रेरणा मिलेगी और उन्हें आदर, आत्म-सम्मान और खुशहाली का नया जीवन जीने की राह दिखाई देगी। हमारी सरकार अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और स्त्रियों के सशक्तिकरण तथा उनके विकास के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। हमारा राजनैतिक मंच सशक्तिकरण के माध्यम से विकास का एक मंच है।

आज इन पुस्तकों का विमोचन करते हुए मैं इस समारोह में श्री नरेन्द्र के जीवन को प्रतिबिम्बित करनेवाली इस आशा के साथ भाग ले रहा हूँ कि इसमें हमारे भारत के सपनों को साकार करने के महत्वपूर्ण सबक शामिल हैं क्योंकि यह एक अच्छे भविष्य की आशा है जो जीवन को जीने लायक बनाती है, खासकर उन लोगों के लिए जिनका भूतकाल संघर्षमय रहा है और वर्तमान में भी जिनके लिए बहुत कम खुशियां हैं। मुझे श्री नरेन्द्र के लेखों में जो उत्प्रेरक बात लगती है वह भविष्य के बारे में उनकी आशावादिता है, जो उन्होंने अपने निजी

जीवन से ली है और उनके पिताजी के जीवन ने हमारे देश तथा हमारी अर्थव्यवस्था के बारे में उनकी सोच को आकार दिया।

मैं भारतीय अर्थव्यवस्था पर लिखी उनकी पुस्तक "री-इमरजिंग इंडिया" पर उनके द्वारा दिए गए उपसंहार का अध्ययन करके बहुत खुशी महसूस कर रहा हूँ। वास्तव में, भारत की कहानी इस वाक्यांश से अच्छी तरह उजागर होती है। आमतौर पर अर्थशास्त्री उभरते बाजारों का संदर्भ देते हैं। मुझे आशा है कि श्री नरेन्द्र की पुस्तक उन विश्लेषकों को तथाकथित "उभरते हुए बाजारों" और "पुनः उभरते हुए बाजारों" के बीच फर्क करने हेतु प्रोत्साहित करेगी।

चीन की तरह भारत केवल "उभरता हुआ बाजार" नहीं है। यदि यह कुछ है तो वह "पुनः उभरता हुआ बाजार" है। हमारा इतिहास विश्व में वस्तुओं, सेवाओं और विचारों का सक्रिय रूप से आदान-प्रदान करने का इतिहास रहा है। एक समय था जब हमारा सकल घरेलू उत्पाद विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का एक-चौथाई था। भारत इस समय विश्व अर्थव्यवस्था में अपनी खोई हुई जगह पुनः हासिल करने में लगा हुआ है, ताकि वह विश्व स्तर पर आर्थिक विकास के क्षेत्र में पुनः उभर सके।

तथापि, इस प्रक्रिया को तेज करने के लिए हमें समानता और सामाजिक न्याय के प्रश्न पर उसी तरह अधिक ध्यान देना होगा जिस प्रकार हम अपनी अर्थव्यवस्था में आधुनिकीकरण और उदारीकरण तथा गैर-नौकरशाही के मुद्दों पर ध्यान देते रहे हैं। मैंने कई बार हमारी जैसी जटिल राज-व्यवस्था में "दोनों कदमों पर चलने" की बात कही है। हमें ऐसी नीतियों का अनुसरण करना चाहिए जो समानता और सामाजिक न्याय पर ध्यान दें और साथ ही साथ कार्यकुशलता तथा उद्यमशीलता की मांगों को पूरा करे। हमें बहुलवादी लोकशाही के ढांचे में रहकर ऐसा करना होगा। यह आसान कार्य नहीं है। विश्व के कुछ देशों ने यह कोशिश की है और इसमें से बहुत कम देश सफल हुए हैं। वास्तव में, हमारे जैसे किसी बड़े देश ने ऐसा नहीं किया है। परंतु मेरा यह मानना है कि यही एक रास्ता है जिस पर हम आगे बढ़ सकते हैं।

डॉ0 नरेन्द्र के कार्य में मुझे जो संतोषपूर्ण बात लगी है वह है — उनका आधुनिकीकरण का अनुसरण करने के साथ-साथ भेदभाव के खिलाफ संघर्ष की इस दृष्टि को उजागर करना। हमारे देश में कुछ ऐसे लोग हैं जो वास्तविकता के केवल एक पहलू की ओर ही अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करते हैं। यदि अपनी समग्र ऊर्जा को भूतकाल लिखने में खर्च कर लिया जाता है, तो हम भविष्य की कहानी कब लिखेंगे? दोनों कार्यों को साथ-साथ चलाना होगा। हमें समाज को उन कुप्रथाओं से छुटकारा दिलाना होगा जिन्होंने हमें पिछड़ा

बनाए रखा। परंतु हमें एक नये भारत का निर्माण करना होगा जो विश्व में आत्म-विश्वास के साथ खड़ा हो सके।

मेरा यह मानना है कि श्री नरेन्द्र के सभी कार्यों का यही सार है। मैं सभी राजनेताओं और समाज सुधारकों से श्री जाधव की आत्म-कथा और "रि-इमरजिंग इंडिया" के शोध-प्रबन्ध का अध्ययन करने का आग्रह करता हूं। इन दोनों से हमें सही संदेश लेना चाहिए। श्री नरेन्द्र की आत्म-कथा हमारे सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण को आकार देगी। यह हमारी शिक्षा नीति को नया स्वरूप प्रदान करेगी। भारतीय अर्थव्यवस्था पर लिखी उनकी पुस्तक आर्थिक नीति पर हमारी सोच को नया आयाम देगी।

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगा कि जब मैं श्री नरेन्द्र के विश्व दृष्टिकोण पर सोचता हूं, तब मुझे डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के विश्व दृष्टिकोण की याद आती है। डॉ. अम्बेडकर ने अपने आप में एक समाज सुधारक के आमूल दृष्टिकोण का संयोजन भी किया। वे वास्तव में एक सामाजिक क्रांतिकारी तथा आर्थिक और राजनीतिक आधुनिकता के भविष्य की ओर दृष्टि रखने वाले व्यक्ति थे। इन दोनों ही दृष्टिकोणों से भारतीय संविधान को तैयार किया गया। इसमें समाज सुधार और राजनीतिक तथा आर्थिक आधुनिकीकरण के प्रति समान रूप से प्रतिबद्धता दर्शाई गई है।

मैं आशा करता हूँ कि इन पुस्तकों की सफलता श्री नरेन्द्र को और अधिक पुस्तकें लिखने के लिए प्रेरित करेगी तथा राष्ट्रीय नीति के महत्वपूर्ण मुद्दों पर हमारे देश की जनता को जागरूक बनाएगी। मैं कामना करता हूँ कि श्री नरेन्द्र हमारे देश का गौरव बढ़ाने के लिए अनेक वर्षों तक सक्रिय रूप से बौद्धिक तथा सामाजिक कार्य करते रहें। मैं उनके कार्यों के लिए उन्हें बधाई देता हूँ और भविष्य में उनकी सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। ईश्वर की उन पर हमेशा कृपा बनी रहे और उन्हें अपने कार्यों में सफलता मिलती रहे।